Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 10 | ISSUE : 11 | NOVEMBER 2024

राजस्थान के किसानों पर आधुनिकता का प्रभाव

राजेश [1]

[1] (शोधार्थी), विभाग- समाजशास्त्र, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर.

ABSTRACT:

यह अध्ययन राजस्थान के किसानों पर आधुनिकता के प्रभाव व उनसे उत्पन्न समस्याओं को प्रदर्शित करने के लिए किया गया हैं, इस अध्ययन के अन्तर्गत किसानों की आर्थिक व सामाजिक स्थिति में हुऐ परिवर्तनों का विश्लेषण किया गया हैं ताकि पता लगाया जा सके की आधुनिकता ने इनको कहां तक प्रभावित किया हैं, वर्तमान परिपेरक्ष्य में इसकी उपयोगिता कहां तक सिद्ध हुई हैं। इसकी भी पुष्टी करने की चेष्टा की गई है। भारत सरकार द्वारा इसमें क्या महत्वपूर्ण भूमिका निभाई गई हैं। इन विषयों का भी विश्लेषण किया गया हैं।

KEYWORDS:

तकनीकी उन्नति, शिक्षा का स्तर, सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक परिवर्तन, आर्थिक प्रभाव, सरकारी समस्याओं का प्रभाव ।

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
28th November 2024	30th November 2024

विषय उपस्थापनः-

किसान भारत की अर्थव्यवस्था की आधारशिला हैं क्योंकि अधिकांश भारतीय आबादी कृषि पर निर्भर हैं। भारत में रहने वाले लगभग 1.3 मिलियन लोगों में से लगभग 90 मिलियन लोग कृषि पर आश्रित हैं। वर्तमान में आधुनिकता का प्रभाव बहुत अधिक बढ़ता जा रहा हैं। यह आधुनिकता कृषि को भी अपने प्रभाव क्षेत्र में ले चुकी हैं। आज का विषय राजस्थान में किसानों पर आधुनिकता के प्रभाव को परिलक्षित कर रहा हैं। यह आधुनिकता किसी एक क्षेत्र विशेष में न होकर किसानों को समग्र रूप से प्रभावित कर रही हैं। इससे अन्तर्गत हम निम्नलिखित पहलुओं पर विचार करेगें:-

1. तकनीकी उन्नतिः- आजकल कृषि पारम्परिक तरीकों के साथ-साथ नये तरीकों से की जा रही हैं। इस हेतु कृषि में नये-नये उपकरणों व नई-नई तकनीकों का प्रयोग किया जा रहा हैं। जिसने किसानों की उत्पादकता को परिवर्तित कर दिया हैं। जैसे- हार्वेस्टर पद्धति, ड्रीप सिंचाई, मेढ़ बांध कर सिंचाई, फव्वारा सिंचाई आदि।

भारत सरकार भी इस हेतु प्रयासरत हैं। सौर ऊर्जा संचालित पम्पसैट अनुदान राशि के आधार पर प्रदान किये जा रहे हैं। फर्टिलाइजर्स व उन्नत बीज उपलब्ध करवाये जा रहें है। कृषि हेतु आधुनिक तकनीक आधारित यत्रों का अनुदान राशि पर वितरण किया जा रहा हैं।

सारणी - I कृषि तकनीक का प्रयोगः- किसानों पर अध्ययन का विश्लेषण

क्र.सं.	कृषि में तकनीकी प्रकार	प्रतिशत(%)
1.	प्राचीन/परम्परागत	7.68
2.	आधुनिक	14
3.	दानो प्रकार (परम्परागत एवं आधुनिक)	75
4.	जवाब नहीं मिला	3.32
	कुल	100

सारणी-II सिंचाई के प्रकार

क्र.सं.	सिंचाई के प्रकार	प्रतिशत
1.	विद्युत पम्पसेट	40.20
2.	सोलर पम्पसेट	7.80
3.	फव्वारा पद्धति	33.90
4.	बूंद-बूंद सिंचाई	18.10

2. शिक्षा का स्तरः- आधुनिकता ने हमारी शिक्षा व्यवस्था में भी परिवर्तन ला दिया हैं। किसानों द्वारा आधुनिक तकनीकों और नई प्रथाओं को अपनाने में सर्वाधिक सहयोग शिक्षा व्यवस्था का ही माना गया हैं। आजकल का किसान पढ़ा-लिखा हैं। कम भूमि पर कम खर्च पर उत्पादकता के स्तर को बढ़ाने पर लगा हुआ हैं। खाद्यान्न फसलों में परिवर्तन कर वृद्धि को प्राप्त कर चुका हैं। अब प्रत्येक स्थान पर अनुकूल जलवायु न होने पर उन्नत कृषि करना सीख चुका हैं। शिक्षा ने किसानों की आर्थिक स्थिति, सामाजिक स्थिति को अग्रसर कर दिया हैं। किसान अपनी पुरानी परम्परा से बाहर निकलना प्रारम्भ हो चुका हैं।

3. सामाजिक संरचनाः- इसके अन्तर्गत हम किसानों की पारम्परिक एवं आधुनिक जीवन शैलियों के अन्तर्गत होने वाले एक व्यापक बदलाव का विश्लेषण करते हैं। आधुनिकता के कारण जहां बहुत अधिक मात्रा में लाभदायक स्थितियां उत्पन्न हुई है वहीं कुछ महत्वपूर्ण कमिया भी उभर कर आई है इसने हमारी पारम्परिक संयुक्त परिवार प्रणाली को कमजोर करना आरम्भ कर दिया हैं। किसानों के सामाजिक जीवन को बहुत अंधिक व्यक्तिगत और एकल परिवार के रूप में केन्द्रित करना आरम्भ कर दिया हैं। व्यक्ति में यांत्रिकता का प्रभाव अत्यधिक मात्रा में बढ़ता जा रहा हैं। सामाजिक सावयवता का विघटन देखने को मिल रहा हैं।

नवीनतम तकनीकी प्रयोग ने गंभीर बीमारियों का आगमन कर दिया हैं। जीवन प्रत्याशा का स्तर निम्न हो गया है। व्यक्तियों मे घनिष्ठता का प्रभाव कम होता जा रहा हैं। प्राचीन संस्कृति का विलोप होता जा रहा हैं। आधुनिकता ने सामाजिक संरचना को परिवर्तन के उस दौर की और अग्रसर कर दिया हैं। जहां हम मूल संस्कृति से विमुख होकर एक ऐसी नई अध्यारोपित संस्कृति की और चले जा रहे हैं। जहां मानव मानव न रहकर एक यंत्र बन जायेगा।

सारणी- III आधुनिकता से सामाजिक संरचना का स्वरूप

क्र.सं.	परिवारिक स्वरूप	प्रतिशत
1.	सयुक्त परिवार	52.30
2.	एकामी परिवार	37.70
	कुल	100

सारणी- वैवाहित स्थिति के आधार पर

क्र.सं.	वैवाहित स्थिति	प्रतिशत
1.	अविवाहित	2.60
2.	विवाहित	93.30
	(i) अरेज मैरिज	57.10
	(ii) कोर्ट मैरिज	36.20
3.	विवाह विच्छे	0.30
4.	विदूर/विधवा	3.60
	कुल	100

4. सांस्कृतिक परिवर्तन:- आधुनिकता ने किसानों के सांस्कृतिक स्वरूप में भी एक बड़ा परिवर्तन किया गया हैं जैसें इनके विवाह के स्वरूप में बदलावा खान-पान,रहन-सहन, वेशभूषा और व्यवहार प्रतिमान में परिवर्तन हुआ हैं इनकी आवास की स्थिति में परिवर्तन दिखाई दे रहा हैं। इन सब को आधार मानकर व्यक्तियों के पारस्परिक रीति रिवाजों और सामाजिक मानदण्डों में बदलाव देखने को मिल रहा हैं। आधुनिक विचारधारा के प्रभाव के कारण किसानों में जाति,लिंग के आधार पर तथा धार्मिकता के प्रभाव से जागरूकता देखने को मिल रही हैं। ये लोग अधिकतर परम्परागत प्रथाओं व परम्पराओं का लोप करते हुए प्रतीत हो रहे है। पाश्चात्य संस्कृति का आगमन आता दिखाई दे रहा हैं।

5. आर्थिक प्रभाव:- आधुनिकता के कारण किसानों की आर्थिक स्थिति में एक बडा सुधार देखने को मिला है। जब से किसानों ने कृषि के क्षेत्र में अत्याधुनिक तकनीक का प्रयोग करना आरम्भ किया हैं। उनकी उपज में बढोतरी हुई है तथा कार्यक्षमता में भी प्रगति देखने को मिली हैं। अब किसानों की स्थिति में निरंतर सुधार आता जा रहा है। परंतु किसान अभी तक संतोषजनक स्थिति में नहीं पहुंच पा रहा हैं। अब भी वह बहुत सी समस्याओं से जुझ रहा है। सरकार इस हेतु प्रयास कर रही है। सरकार के प्रयासों से तथा किसानों के कल्याण हेतु संचालित समस्याओं से शीघ्र ही अपनी वास्तविक स्थिति पर पहुंच जाऐगा।

सरकार के प्रयास:- भारत सरकार द्वारा भी आधुनिकता के इस दौर में किसानों की सहायता हेतु काफी बडी मात्रा में प्रयास किया जा रहा हैं। सरकार द्वारा नई-नई योजनाओं का निर्माण कर किसानों का जीवन स्तर उच्च बनाया जा रहा हैं। आज भारत सरकार द्वारा इलेक्ट्रॉनिक मिडिया के सहयोग से बहुत सी सुविधाऐं किसानों को उपलब्ध करवाई जा रही हैं। इस हेतु ऑनलाईन नेटवर्किंग के आधार पर ऐसा प्लेटफार्म उपलब्ध करवाया जा रहा हैं ताकि किसान कृषि से सम्बन्धित समस्याओं एक आसानी से हल प्राप्त कर सके। इनके आर्थिक स्तर को मजबूत बनाने के लिए अनुदान सेव का प्रयोग किया जा रहा है। बैकों के द्वारा ऋण उपलब्ध करवाया जा रहा है। उपकरणों की आवश्यकता पूर्ति हेतु उन पर अनुदान प्रदान किया जा रहा हैं। इस हेतु भारत सरकार द्वारा बहुत से पोर्टल उपलब्ध करवाये जा रहे है।

(i) किसान क्रेडिट कार्ड:- 1998 में सचांलित भारत सरकार, नाबार्ड, ट्ठप् सयुंक्त सहयोग *से किसानों को कम ब्याज दर पर ऋण उपलब्ध करवाने का महत्वपूर्ण कार्य कर रही हैं। यह 3 लाख तक 4% ब्याज दर से ऋण उपलब्ध करवाती हैं।*

(ii) सहकारी किसान कार्ड:- *गावों में किसानों को ऋण सुविधा प्रदान करने हेतु संचालित महत्वपूर्ण इकाई हैं। ग्राम सहकारी समिति के निर्देशन में यह ऋण उपलब्ध करवाती है।*

(iii) सरकार द्वारा ऋण देने के स्त्रोत:- *इसके अलावा सरकार द्वारा किसानों की सहायता हेतु अन्य ऋण सुविधाएं भी उपलब्ध करवाई जा रही है ये किसानों को कृषि हेतु आवश्यक यंत्रों, बीज, खाद व अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति करती है। ये ऋण व्यवस्था सामान्यतः कम ब्याज पर देय होती है। ये दो प्रकार की व्यवस्थाऐं होती हैं।*

(अ) अल्पकालीन ऋण व्यवस्था

-खाद, बीज, कीटनाशक उपलब्ध करवाने हेतु।

-कटाई, बुआई हेतु।

-सामान्य खर्चों हेतु ।

(ब) दीर्घकालीन ऋण व्यवस्था

-जमीन खरीदने हेतु।

-यंत्रों को खरीदने हेतु।

-सिंचाई के साधनों हेतु जैसे पम्प सैट, फव्वारा सैट आदि।

-फार्म हाउस जैसे- पाली हाउस, ग्रीन हाउस आदि।

सारणी-IV किसानों द्वारा ऋण लेने के साधन (अनुमानित आँकड़े)

क्र.सं.	ऋण के स्त्रोत	प्रतिशत
1.	स्थानीय व्यापारी	20%
2.	राष्ट्रीय बैंक	40%
3.	सहकारी समितियां	30%
4.	निजी फाईनेंस	5%
5.	बिना ऋण व्यवस्था	5%
	कुल	100%

(IV) सरकार की अन्य कल्याणकारी योजनाऐं:-

सरकार द्वारा किसानों को सुविधाऐं प्रदान करने हेतु सामान्य रूप से कई प्रकार की योजनाओं का संचालन किया जा रहा है जिन्हें हम निम्न बिन्दुओं के आधार पर स्पष्ट करेगें।

-राजस्थान के ऋणमाफी योजना।

-प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना।

-मुफ्त फसल बीमा योजना।

-मनरेगा योजना।

-पीएम आवास योजना।

अनुसंधान प्रविधि:- अनुसंधान एक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से तथ्यों और सिद्धातो का गहन अध्ययन करते हुए उसका अवलोकलन व संकलन किया जाता हैं। जिसके लिऐ विभिन्न पद्धतियों का प्रयोग किया जाता हैं। जैसे ऐतिहासिक, वर्णात्मक, प्रयोगात्मक पद्धति, व्यवहारिक पद्धति, क्रियात्मक शोध पद्धति वर्तमान शोध पत्र हेतु व्याख्यात्मक एवं वर्णनात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया हैं।

(i) अध्ययन पद्धति:- व्याख्यात्मक एवं वर्णात्मक

(ii) आकड़ों का सग्रंह:-

आकड़ों का संकलन दो स्त्रोतों को आधार मानकर किया हैं।

(अ) प्राथमिक स्त्रोत (ब) द्वितीयक स्त्रोत

(अ) प्राथमिक स्त्रोत:- कृषि विभाग सम्बन्धित अधिकारियों, किसानों सामान्य ग्रामीण किसानों द्वारा प्रश्नावली और अनुसूचि के आधार पर प्राप्त किया गया।

(ब) द्वितीयक स्त्रोत:-

- द्वितीयक आकड़ों का सग्रंह किसान पोर्टल पीएम किसान, एसएमएस पोर्टल्,

किसान प्रवंधन प्रणाली, पीएम किसान पोर्टल, राम किसान साथी पोर्टल आर्थिक समीक्षा रिकार्ड के माध्यम से किया गया।

- राज्य सरकार द्वारा प्रकाशित एवं अप्रकाशित सुचनाओं द्वारा डाटा सग्रंह किया गया।

निष्कर्ष:- उपरोक्त विवेचना के आधार पर स्पष्ट होता है कि राजस्थान की कृषि प्रधानता में आधुनिकता ने अपना एक विशेष महत्व रख दिया है आधुनिकता कृषि के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित कर रही है जिसके साकारात्मक व नाकारात्मक दोनों स्तरों में परिणाम प्राप्त हो रहे है कृषि ने अपनी उन्नति की अवस्था को प्राप्त करना आरम्भ कर दिया है। भारत सरकार की बहुत सी महत्वपूर्ण योजनऐं इसके विकास मैं अपना योगदान दे रही है। इनके समकक्ष दुसरी तरफ कृषि में तकनीकी प्रयोग से कई महत्वपूर्ण सामाजिक समस्याऐं भी उत्पन्न होनी आरम्भ हो चुकी है।

REFERENCES

1. साहु खोमन लाल एवं महान अश्वनी (2021) "आधुनिक कृषि व्यवस्था में किसानों का सामाजिक अध्ययन।"

2. वर्मा ब्रजेन्द्र कुमार (10 अक्टूबर 2019) ने "भारतीय किसानों पर सोशल मीडिया के प्रभावों का एक समीक्षात्मक अवलोकन (सीतापुरां जिले में सदंर्भ में) "

3. पवित्रा (2019) "फ्रांस उपन्यास में कर्म ग्रस्त किसान जीवन की त्रासदी" इटरनेशल कर्नल ऑफ रिव्यू एंड रिसर्च इन सोशल साइंसेस में शोध पत्र।

4. कुमार अनिल (अगस्त 2018) ने इंडिया जरनल ऑफ रिसर्च में "कृषि का आधुनिकीकरण एवं पर्यावरण पर इसका प्रभाव" वर्ष 2005-06 से 2014-15 (राजस्थान के श्रीगंगानगर जिले के विशेष संदर्भ में)

5. वाजपेयी अनीता (अप्रैल 2017) नें इंटरनेशल जर्नल ऑफ सांईटिफिक एंड इनोवेटिव रिसर्च स्टडी में अपना लेख" किसान कर्जमाफी "समाजशास्त्रीय विश्लेषण" प्रस्तुत किया।

6. सैनी विनोद कुमार (सितम्बर 2017) इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एकेडमिक रिसर्च एंड डेवलपमेंट में अपना शोध पत्र "सीकर जिले में कृषि आधुनिककरण में कृषि यंत्र का प्रभाव।

7. उपाध्याय विजय प्रकाश (3मार्च 2016) ने इंडियन जर्नल ऑफ रिसर्च में शोध पत्र "कृषि विकास और सुचना संचार प्रौद्योगिकी"

8. ठाकुर कुमार कृष्णा (जुलाई 2013) ने एरो इंटरनेशनल रिसर्च में शोध पत्र "भारत सरकार द्वारा किसानों के लिए सरकारी योजनाएं

वेबसाईट रिपोर्ट

1. राष्ट्रीय किसान नीति (2007)

2. http://www.bbe.com/hindi/India/2015/04/150403

3. agricoop.nic.in/site/default/files/npfhindi.pdf

4. kisanindia.com

5. indiagrowing.com